MAA OMWATI DEGREE COLLEGE HASSANPUR (PALWAL)

Subject:- SPORTS MANAGEMENT

Class:- BA 3rd Semester (Major)

BA(MAJOR) 3RD SEM (CHAPTER-1)

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट (Sports Management) का अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definition):-

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का अर्थ (Meaning of Sports Management):-

** स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का अर्थ है खेलों से संबंधित गतिविधियों की योजना बनाना, आयोजन करना, संचालन करना और नियंत्रण करना। इसमें खिलाड़ियों, कोचों, आयोजनों, खेल संस्थाओं और खेल से जुड़ी अन्य व्यवस्थाओं का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया जाता है।

यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें खेल प्रतियोगिताओं, खेल सुविधाओं, खेल टीमों और खिलाड़ियों के प्रशासनिक और व्यावसायिक पक्षों का संचालन** शामिल होता हैं।

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट की परिभाषा (Definition of Sports Management in Hindi):-

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत खेल संबंधी गतिविधियों, कार्यक्रमों, संस्थाओं और व्यक्तियों का नियोजन, संगठन, निर्देशन और नियंत्रण किया जाता है, ताकि खेलों का अधिकतम विकास और प्रभावी संचालन सुनिश्चित किया जा सके।"

:: *स्पोर्ट्स मैनेजमेंट के प्रमुख घटक (Key Components of Sports Management):-

1. योजना (Planning):- खेल कार्यक्रमों और आयोजनों की रूपरेखा तैयार करना।
2. संगठन (Organizing) :- खेल टीमों, स्टाफ और संसाधनों का समुचित वितरण करना।
3. नेतृत्व (Leadership) :- खिलाड़ियों और स्टाफ को प्रेरित करना और मार्गदर्शन देना।
4. नियंत्रण (Controlling):- खेल कार्यक्रमों की निगरानी और मूल्यांकन करना।
5. समन्वय (Coordination):- सभी गतिविधियों को एक साथ जोड़कर लक्ष्य की ओर बढ़ाना।

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट के क्षेत्र (Fields of Sports Management) :-

1. इवेंट मैनेजमेंट (Event Management) – खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन।
2. टीम मैनेजमेंट (Team Management) – खिलाड़ियों और कोचों का प्रबंधन।
3. स्पॉन्सरशिप और मार्केटिंग (Sponsorship & Marketing) – ब्रांड प्रमोशन और विज्ञापन।

4. स्पोर्ट्स लॉ और अनुशासन (Sports Law & Ethics) – नियमों का पालन और नैतिकता।

5. फाइनेंस मैनेजमेंट (Finance Management) – बजट और आर्थिक प्रबंधन।

:: स्पोर्ट्स मैनेजर की जिम्मेदारियाँ (Responsibilities of a Sports Manager) :-

* खेल आयोजनों की योजना बनाना और उनका संचालन करना।

* खिलाड़ियों और कोचों के बीच समन्वय स्थापित करना।

* खेल सुविधाओं और संसाधनों का प्रबंधन करना।

* स्पॉन्सरशिप और मीडिया से संवाद बनाए रखना।

* बजट और खर्चों की निगरानी करना।

:: भारत में स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का महत्व (Importance of Sports Management in India) :-

* खेलों के पेशेवर स्तर पर विकास के लिए।

* अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए।

* खिलाड़ियों को उचित प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने के लिए।

* खेलों को व्यवसायिक रूप में विकसित करने के लिए।

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में करियर (Career in Sports Management) :-

1. स्पोर्ट्स इवेंट मैनेजर

2. टीम मैनेजर

3. स्पॉन्सरशिप मैनेजर

4. स्पोर्ट्स एनालिस्ट

5. फिटनेस मैनेजर

6. खेल पत्रकार / मीडिया कोऑर्डिनेटर

UNIT (CHAPTER-2)

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट के सिद्धांत (Principles of Sports Management) :-

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ प्रमुख सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक होता है। ये सिद्धांत किसी भी खेल आयोजन, संस्था, टीम या खिलाड़ी के प्रबंधन को प्रभावी और व्यवस्थित बनाने में सहायक होते हैं।

1. नियोजन का सिद्धांत (Principle of Planning) :-

* यह सबसे पहला और महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

* इसमें खेल आयोजनों की रूपरेखा, लक्ष्यों का निर्धारण और उनके लिए आवश्यक संसाधनों की योजना बनाई जाती है।

:: **उदाहरण :-** एक क्रिकेट टूर्नामेंट के आयोजन से पहले सभी तारीखें, स्थान, टीमें और बजट की योजना बनाना।

2. ****संगठन का सिद्धांत (Principle of Organizing) :-**

* संसाधनों, मानवबल और गतिविधियों को सुव्यवस्थित करना।

* विभिन्न विभागों को जिम्मेदारियाँ सौंपना।

उदाहरण :- खिलाड़ियों, कोच, मेडिकल टीम, मीडिया टीम आदि के कार्यों का विभाजन।

3. **नेतृत्व का सिद्धांत (Principle of Leadership) :-**

* टीम को प्रेरित करना और सही दिशा देना।

* एक अच्छा स्पोर्ट्स मैनेजर या कोच खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करता है।

उदाहरण :- कोच द्वारा टीम को प्रेरित करना और जीत की रणनीति बनाना।

4. **नियंत्रण का सिद्धांत (Principle of Controlling) :-**

* सभी गतिविधियों की निगरानी और मूल्यांकन करना।

* त्रुटियों की पहचान करके सुधार करना।

उदाहरण :- खेल अभ्यास सत्रों की समीक्षा और सुधार।

5. समन्वय का सिद्धांत (Principle of Coordination) :-

* सभी विभागों और व्यक्तियों के बीच तालमेल बनाना।

* समय पर कार्यों की पूर्ति सुनिश्चित करना।

उदाहरण :- टीम, मीडिया और आयोजकों के बीच समन्वय बनाए रखना।

6. लचीलापन का सिद्धांत (Principle of Flexibility) :-

* परिस्थितियों के अनुसार योजना और नीतियों में बदलाव करना।

उदाहरण :- खराब मौसम के कारण मैच की तारीख या स्थान बदलना।

7. प्रेरणा का सिद्धांत (Principle of Motivation) :-

* खिलाड़ियों और कर्मचारियों को उत्साहित और प्रेरित रखना।

* पुरस्कार, प्रशंसा और सम्मान से उनका मनोबल बढ़ाना।

उदाहरण :- "मैन ऑफ द मैच" पुरस्कार देना।

:: स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का दायरा / क्षेत्र (Scope of Sports Management) :-

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का दायरा आज के समय में बहुत विस्तृत हो गया है। यह केवल खेल आयोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि खेल उद्योग के हर क्षेत्र को समाहित करता है।

1. खेल आयोजन प्रबंधन (Sports Event Management) :-

* टूर्नामेंट, प्रतियोगिताओं और खेल मेलों का आयोजन।

* जैसे – ओलंपिक, आईपीएल, प्रो कबड्डी लीग आदि।

2. टीम और खिलाड़ी प्रबंधन (Team & Athlete Management) :-

* खिलाड़ियों की ट्रेनिंग, फिटनेस, अनुशासन और करियर विकास का प्रबंधन।

3. खेल विपणन (Sports Marketing) :-

* ब्रांड प्रमोशन, विज्ञापन, टिकट बिक्री, मर्चेंडाइजिंग आदि।

* उदाहरण: जर्सी पर ब्रांड का प्रचार।

4. खेल वित्त प्रबंधन (Sports Finance Management) :-

* बजट बनाना, निवेश करना, खर्चों की निगरानी करना।

* स्पॉन्सरशिप और राजस्व स्रोतों का प्रबंधन।

5. खेल कानून और नैतिकता (Sports Law and Ethics) :-

* डोपिंग, अनुशासन, कॉन्ट्रैक्ट, ट्रांसफर आदि का कानूनी प्रबंधन।

* खिलाड़ियों के अधिकारों की रक्षा।

6. खेल तकनीक और विश्लेषण (Sports Technology & Analysis) :-

* डेटा एनालिसिस, वीडियो समीक्षा, प्रदर्शन ट्रैकिंग आदि।

7. खेल मीडिया और संचार (Sports Media & Communication) :-

* मीडिया से संवाद, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, प्रेस कॉन्फ्रेंस आदि।

* खिलाड़ी और टीम की छवि को सकारात्मक बनाए रखना।

8. फिटनेस और स्वास्थ्य प्रबंधन (Fitness & Health Management) :-

* खिलाड़ियों की डाइट, एक्सरसाइज, मेडिकल सहायता, फिजियोथेरेपी आदि का प्रबंधन।

9. खेल शिक्षा और प्रशिक्षण (Sports Education & Training) :-

* कोचिंग संस्थान, स्पोर्ट्स कॉलेज, ट्रेनिंग अकादमी आदि की स्थापना और संचालन।

निष्कर्ष (Conclusion) :-

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट एक बहुआयामी क्षेत्र है, जिसमें योजना, संगठन, नेतृत्व और नियंत्रण जैसे सिद्धांतों के आधार पर खेलों के विविध पक्षों का प्रबंधन किया जाता है। इसका दायरा आज केवल खेल मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि **व्यावसायिक, शैक्षणिक, कानूनी और तकनीकी क्षेत्रों तक फैला हुआ है।

UNIT-1 (CHAPTER-3)

:: इवेंट मैनेजमेंट में स्पोर्ट्स मैनेजमेंट की भूमिका (Role of Sports Management in Event Management):-

: स्पोर्ट्स इवेंट मैनेजमेंट का मतलब है :– खेलों से संबंधित किसी भी छोटे या बड़े आयोजन की योजना बनाना, उसे व्यवस्थित करना, लागू करना और मूल्यांकन करना।** इसमें टूर्नामेंट, लीग, प्रतियोगिताएँ, मैराथन, स्पोर्ट्स डे आदि शामिल होते हैं।

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट इन आयोजनों को सफल बनाने के लिए एक मुख्य भूमिका निभाता है। यह आयोजन के हर पहलू को संगठित, सुरक्षित, लाभदायक और स्मरणीय बनाने में मदद करता है।

:: मुख्य भूमिकाएँ (Key Roles):-

1. योजना और रूपरेखा बनाना (Planning & Strategy) :-

* इवेंट की रूपरेखा तैयार करना: जैसे आयोजन की तिथि, स्थान, बजट, प्रतिभागियों की संख्या।

* खेलों के प्रकार, प्रतियोगिताओं की संरचना (format) तय करना।

* रिस्क मैनेजमेंट और आकस्मिक योजना (contingency plan) बनाना।

उदाहरण :- एक इंटर-स्कूल एथलेटिक्स प्रतियोगिता के लिए पहले से शेड्यूल, स्थान, और खेलों की लिस्ट तय करना।

2. स्थान और सुविधाएँ प्रबंधन (Venue and Facility Management) :-

* आयोजन स्थल का चयन और उसकी तैयारियाँ (जैसे मैदान, स्टेडियम)।

* दर्शकों के बैठने की व्यवस्था, खिलाड़ियों के लिए ड्रेसिंग रूम, मेडिकल सुविधा, आदि।

* सुरक्षा और साफ-सफाई की व्यवस्था।

:: उदाहरण :-क्रिकेट मैच के लिए पिच की तैयारी, ग्राउंड मार्किंग, स्टैंड्स की व्यवस्था।

3. मानव संसाधन का प्रबंधन (Human Resource Management) :-

* वालंटियर्स, अंपायर्स, कोच, मेडिकल स्टाफ, सिक्योरिटी आदि की भर्ती और ट्रेनिंग।

* जिम्मेदारियों का सही वितरण और सुपरविजन।

उदाहरण :- मैच के दौरान स्कोरकीपर, टाइमकीपर और रेस मैनेजर्स की नियुक्ति।

4. वित्तीय प्रबंधन (Financial Management) :-

* बजट तैयार करना और सभी खर्चों को नियंत्रित करना।

* स्पॉन्सरशिप, टिकट बिक्री, विज्ञापन आदि से आय अर्जित करना।

* पारदर्शिता बनाए रखना।

उदाहरण :- एक स्पोर्ट्स लीग के लिए बजट बनाना जिसमें ट्रैवल, इनाम, ब्रांडिंग आदि शामिल हों।

5. विपणन और प्रचार (Marketing & Promotion) :-

* खेल आयोजन को प्रचारित करने के लिए पोस्टर, विज्ञापन, सोशल मीडिया का उपयोग।

* मीडिया कवरेज और ब्रांड स्पॉन्सरशिप से जुड़ना।

* आयोजन को लोगों तक पहुँचाना और दर्शकों को आकर्षित करना।

:: **उदाहरण :-**मैराथन इवेंट के लिए सोशल मीडिया पर प्रचार और टी-शर्ट ब्रांडिंग।

6. पंजीकरण और प्रवेश प्रक्रिया (Registration & Entry Management) :-

* खिलाड़ियों, टीमों और दर्शकों का ऑनलाइन/ऑफलाइन पंजीकरण करना।

* आईडी कार्ड, पास और प्रवेश नियम बनाना।

:: **उदाहरण :-** कॉलेज फेस्ट में स्पोर्ट्स प्रतियोगिताओं के लिए ऑनलाइन फॉर्म जारी करना।

7. सुरक्षा और आपातकालीन व्यवस्था (Security & Emergency Services) :-

* आयोजन स्थल पर पर्याप्त सुरक्षा बल और सीसीटीवी की व्यवस्था।

* प्राथमिक उपचार (First Aid), एम्बुलेंस और डॉक्टर की उपलब्धता।

* आपात स्थिति से निपटने की तैयारी।

:: **उदाहरण :-** फुटबॉल मैच के दौरान घायल खिलाड़ी के लिए फिजियोथैरेपिस्ट और स्ट्रेचर की व्यवस्था।

8. आयोजन का संचालन (Event Execution) :-

* इवेंट के दिन सभी गतिविधियों का सुचारु संचालन।

* समयानुसार खेलों का आरंभ और समाप्ति।

* रजिस्ट्रेशन, उद्घाटन, पुरस्कार वितरण आदि कार्यक्रमों का संचालन।

9. मूल्यांकन और रिपोर्टिंग (Post-Event Evaluation & Reporting) :-

* आयोजन की समीक्षा करना – क्या अच्छा हुआ, क्या सुधार की जरूरत है।

* रिपोर्ट तैयार करना, फीडबैक लेना और दस्तावेजीकरण करना।

उदाहरण :- आयोजन के बाद प्रतिभागियों से फीडबैक फॉर्म भरवाना।

::निष्कर्ष (Conclusion) :-

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, किसी भी खेल आयोजन को सफल, सुरक्षित, व्यवस्थित और आकर्षक बनाने में केन्द्रीय भूमिका निभाता है। यह केवल आयोजन की योजना तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण क्रियान्वयन, मूल्यांकन और भविष्य की योजना को भी प्रभावित करता है।

UNIT-2 (CHAPTER-2)

:: नेतृत्व पर निबंध:-

1. भूमिका (Introduction) :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज को एक दिशा देने के लिए एक सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है। नेतृत्व (Leadership) वह गुण है जो किसी व्यक्ति को दूसरों का मार्गदर्शन करने, उन्हें प्रेरित करने और एक निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर करने की क्षमता प्रदान करता है।

2. नेतृत्व का अर्थ (Meaning of Leadership) :-

नेतृत्व का अर्थ है – किसी समूह, समाज या संगठन को एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु दिशा प्रदान करना और प्रेरित करना। यह वह प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के विचारों, भावनाओं और कार्यों को इस प्रकार प्रभावित करता है कि वे स्वेच्छा से उस दिशा में कार्य करें।

3. नेतृत्व की परिभाषा (Definition of Leadership) :-

:: सामान्य परिभाषा :-

:: नेतृत्व वह कला है जिसमें किसी व्यक्ति द्वारा समूह को एक साझा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन और प्रेरणा दी जाती है।"

| लाइस्ज़े-फेयर नेतृत्व (Laissez-faire) | बहुत कम हस्तक्षेप, स्वतंत्रता अधिक।

5. एक अच्छे नेता के गुण (Qualities of a Good Leader) :-

* आत्मविश्वास

* प्रभावी संचार

* दूरदर्शिता

* ईमानदारी

* समस्या समाधान की क्षमता

* सहानुभूति

* प्रेरणा देने की योग्यता

* निर्णय लेने की शक्ति

6. नेतृत्व का महत्व (Importance of Leadership) :-

* समूह को दिशा प्रदान करता है।

* कार्यों में समन्वय स्थापित करता है।

* टीम भावना को बढ़ाता है।

* लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होता है।

* कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शन करता है।

7. निष्कर्ष (Conclusion) :-

नेतृत्व केवल एक पद या अधिकार नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। एक सच्चा नेता वह होता है जो दूसरों के लिए उदाहरण बनता है, उन्हें प्रेरणा देता है, और निष्ठा, समर्पण व सेवा भाव से समाज या संगठन का विकास करता है।

UNIT-2 (CHAPTER-2)

1. स्वतंत्रतावादी नेतृत्व शैली (Autocratic Leadership Style) :-

::परिभाषा :-

इस शैली में नेता सभी निर्णय खुद लेता है और अपने अधीनस्थों को आदेश देता है कि क्या करना है, कैसे करना है और कब करना है।

:: विशेषताएँ :-

* निर्णय लेने में केवल नेता की भूमिका होती है

* कर्मचारियों की राय या सुझाव नहीं लिए जाते

* कठोर अनुशासन और नियंत्रण

:: लाभ :-

* संकट की स्थिति में तेजी से निर्णय लेना

* अनुभवहीन कर्मचारियों के लिए उपयुक्त

:: हानि :-

* कर्मचारियों में असंतोष

* क्रिएटिविटी और टीमवर्क की कमी

2. लोकतांत्रिक नेतृत्व शैली (Democratic Leadership Style) :-

:: परिभाषा :-

इस शैली में नेता अपनी टीम के सदस्यों की राय और सुझावों को महत्व देता है और निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं।

:: विशेषताएँ :-

* खुला संवाद और विचार-विमर्श

* टीम को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना

* विश्वास और पारदर्शिता

:: **लाभ :-**

* कर्मचारियों में संतुष्टि और प्रेरणा

* टीम वर्क और क्रिएटिविटी को बढ़ावा

:: **हानि :-**

* निर्णय लेने में समय लगता है

* सभी की राय एकमत न हो तो टकराव की स्थिति बन सकती है

3. परामर्शदात्री नेतृत्व शैली (Consultative Leadership Style) :-

:: **परिभाषा:-**

यह शैली लोकतांत्रिक और अधिनायकवादी शैली के बीच की होती है। इसमें नेता सलाह लेता है, पर अंतिम निर्णय खुद ही लेता है।

विशेषताएँ :-

* कर्मचारी से राय ली जाती है

* अंतिम निर्णय नेतृत्व द्वारा लिया जाता है

* आंशिक भागीदारी

:: **लाभ :-**

* कर्मचारी को सुनने का अवसर मिलता है

* निर्णय अपेक्षाकृत बेहतर होते हैं

:: **हानि :-**

* कभी-कभी कर्मचारी की राय नजरअंदाज हो जाती है

* नेतृत्व में अहं की समस्या हो सकती है

4.स्वतंत्रता आधारित नेतृत्व शैली (Laissez-Faire Leadership Style) :-

:: परिभाषा :-

इसमें नेता न्यूनतम हस्तक्षेप करता है और टीम को स्वतंत्र रूप से काम करने देता है।

::विशेषताएँ :-

* निर्णय लेने की आज़ादी टीम को

* नेता मार्गदर्शन और संसाधन प्रदान करता है

* आत्म-प्रेरित टीम के लिए उपयुक्त

:: लाभ :-

* नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा

* आत्मनिर्भरता में वृद्धि

:: हानि :-

* यदि टीम सक्षम न हो तो लक्ष्य प्राप्ति कठिन

* नेतृत्व का अभाव महसूस हो सकता है

5. परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली (Transformational Leadership Style) :-

:: परिभाषा :-

इस शैली में नेता अपने विजन और प्रेरणा से टीम को ऊँचे लक्ष्यों की ओर प्रेरित करता है।

:: विशेषताएँ :-

* प्रेरणादायक दृष्टिकोण

* बदलाव और नवाचार को बढ़ावा

* व्यक्तिगत विकास पर ध्यान

:: लाभ :-

* कर्मचारी का मनोबल बढ़ता है, * संगठन में तेजी से सकारात्मक बदला

UNIT-2 (CHAPTER-3)

एक प्रभावी खेल नेतृत्वकर्ता (Effective Sports Leader) की भूमिका केवल टीम को जीत दिलाना ही नहीं होती, बल्कि खिलाड़ियों के सर्वांगीण विकास, टीम भावना, अनुशासन और प्रेरणा को बनाए रखना भी होती है। एक अच्छे खेल नेता की कुछ प्रमुख **गुण (Qualities)** निम्नलिखित हैं:

प्रभावी खेल नेतृत्वकर्ता के गुण

1. दूरदर्शिता (Vision)

- नेता के पास स्पष्ट लक्ष्य और दृष्टिकोण होना चाहिए।
- वह टीम को सही दिशा दिखाकर उन्हें सफलता की ओर ले जा सके।

2. प्रेरणा देने की क्षमता (Motivational Ability)

- खिलाड़ी कभी हारते हैं, तो कभी निराश भी होते हैं।
- एक अच्छा नेता उन्हें सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है।
- कठिन परिस्थितियों में भी टीम का मनोबल ऊँचा बनाए रखता है।

3. अनुशासन (Discipline)

- स्वयं अनुशासित रहता है और टीम को भी अनुशासन में रखता है।
- समय पर अभ्यास, नियमों का पालन और नैतिकता पर बल देता है।

4. आत्मविश्वास (Self-Confidence)

- निर्णय लेने में दृढ़ रहता है।
- अपनी क्षमताओं और खिलाड़ियों पर विश्वास रखता है।

5. संवाद कौशल (Communication Skills)

- खिलाड़ियों से स्पष्ट और सरल भाषा में संवाद करता है।
- उनकी समस्याओं को सुनता है और सुझाव देता है।
- प्रेरक भाषण से टीम का जोश बढ़ाता है।

6. निर्णय लेने की क्षमता (Decision-Making Ability)

- कठिन परिस्थितियों में त्वरित और सही निर्णय लेने की योग्यता रखता है।
- रणनीति और योजनाओं को समयानुसार बदल सकता है।

7. सहानुभूति और समझ (Empathy and Understanding)

- टीम के हर सदस्य की भावनाओं और जरूरतों को समझता है।
- कमजोर खिलाड़ियों को सहारा देता है और उन्हें सुधारने में मदद करता है।

8. न्यायप्रियता (Fairness)

- सभी खिलाड़ियों के साथ समान व्यवहार करता है।
- पक्षपात या भेदभाव नहीं करता।

9. टीम वर्क को बढ़ावा (Team Building Ability)

- खिलाड़ियों के बीच एकता और सहयोग की भावना उत्पन्न करता है।
- "हम" की भावना को "मैं" से अधिक महत्व देता है।

10. लचीलापन (Flexibility)

- बदलते हालात के अनुसार अपनी रणनीति बदल सकता है।
- नए विचारों और तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार रहता है।

11. आदर्श व्यक्तित्व (Role Model)

- स्वयं अपने आचरण, मेहनत और खेल भावना से उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- खिलाड़ी अपने नेता को देखकर प्रेरणा लेते हैं।

12. सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive Attitude)

- हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच बनाए रखता है।
- खिलाड़ियों को असफलता से सीखने और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष एक प्रभावी खेल नेतृत्वकर्ता न केवल टीम को खेल के मैदान पर जीत दिलाता है बल्कि खिलाड़ियों के जीवन मूल्यों, आत्मविश्वास और चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। उसका अनुशासन, प्रेरणा और दूरदर्शिता टीम को सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाती है।

UNIT-3 (CHAPTER-1)

स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में खेल प्रबंधन (Sports Management in Schools, Colleges & Universities)

खेल प्रबंधन का अर्थ है – शैक्षणिक संस्थानों में खेल गतिविधियों की योजना बनाना, आयोजन करना, नियंत्रण करना, पर्यवेक्षण करना और मूल्यांकन करना ताकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में खेलों की भूमिका सुनिश्चित हो सके।

1. स्कूल स्तर पर खेल प्रबंधन

(क) उद्देश्य

- बच्चों में स्वास्थ्य, शारीरिक फिटनेस और अनुशासन का विकास करना।
- खेलों के माध्यम से सहयोग, टीम भावना और नेतृत्व गुण विकसित करना।
- प्रारम्भिक स्तर से खेल प्रतिभाओं की पहचान करना।

(ख) खेल प्रबंधन की गतिविधियाँ

- **वार्षिक खेल दिवस (Annual Sports Day)** का आयोजन।
- इंट्रा-म्यूरल प्रतियोगिताएँ (Intramural Competitions)।
- शारीरिक शिक्षा की कक्षाएँ और नियमित व्यायाम कार्यक्रम।
- खेल उपकरणों का प्रबंध व रखरखाव।
- खेल शिक्षक (Physical Education Teacher) द्वारा प्रशिक्षण और मार्गदर्शन।

2. कॉलेज स्तर पर खेल प्रबंधन

(क) उद्देश्य

- विद्यार्थियों को खेलों में उच्चस्तरीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।
- राज्य, विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भागीदारी सुनिश्चित करना।
- खेल और शिक्षा में संतुलन स्थापित करना।

(ख) खेल प्रबंधन की गतिविधियाँ

- **इंटर-कॉलेज स्पर्धाएँ (Inter-College Competitions)** का आयोजन।

- कॉलेज की अपनी **खेल टीमें** (Cricket, Football, Athletics आदि) बनाना।
- कोचिंग कैंप का आयोजन और विशेषज्ञ प्रशिक्षकों की व्यवस्था।
- कॉलेज स्तर पर खेल बजट, ग्राउंड, उपकरण, जिम्नेज़ियम आदि का प्रबंधन।
- खिलाड़ियों को **स्पोर्ट्स स्कॉलरशिप** और प्रोत्साहन देना।

3. विश्वविद्यालय स्तर पर खेल प्रबंधन

(क) उद्देश्य

- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों का विकास करना।
- अनुसंधान और खेल विज्ञान (Sports Science) पर कार्य करना।
- छात्रों को खेल प्रबंधन, कोचिंग और खेल विज्ञान में करियर के अवसर उपलब्ध कराना।

(ख) खेल प्रबंधन की गतिविधियाँ

- **इंटर-यूनिवर्सिटी टूर्नामेंट्स (Inter-University Competitions)** का आयोजन।
- खिलाड़ियों को उन्नत प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक और खेल विज्ञान की सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- विश्वविद्यालय खेल परिषद (University Sports Council) के माध्यम से खेल नीतियाँ बनाना।
- राष्ट्रीय खेल महासंघों और स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) से सहयोग।
- खिलाड़ियों को **आरक्षण, छात्रवृत्ति, हॉस्टल सुविधा और खेल करियर गाइडेंस** प्रदान करना।

खेल प्रबंधन के सामान्य तत्व (Common Elements of Sports Management)

1. **योजना (Planning):** प्रतियोगिताओं और प्रशिक्षण की अग्रिम योजना।
2. **संगठन (Organizing):** टीम, उपकरण और खेल सुविधाओं का संगठन।
3. **नेतृत्व (Leadership):** खिलाड़ियों को प्रेरित करना और मार्गदर्शन देना।
4. **नियंत्रण (Controlling):** खेल कार्यक्रमों की देखरेख और मूल्यांकन।
5. **वित्त प्रबंधन (Finance):** खेल बजट, उपकरण खरीद और रखरखाव।
6. **सुविधाएँ (Facilities):** मैदान, जिम, कोर्ट और उपकरणों का रखरखाव।

निष्कर्ष :- स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर खेल प्रबंधन विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। यह न केवल खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारता है बल्कि उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भी मदद करता है

UNIT-3 (CHAPTER-2)

खेल योजना को प्रभावित करने वाले कारक – प्रश्नोत्तर रूप में

प्रश्न 1: खेल योजना (Sports Planning) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:
खेल योजना का अर्थ है – खेल गतिविधियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं से संबंधित सभी कार्यों की पहले से तैयारी करना, जैसे – लक्ष्य निर्धारण, संसाधनों का प्रबंधन, उपकरणों की व्यवस्था और समय का सही उपयोग।

प्रश्न 2: खेल योजना को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक कौन-कौन से हैं?

उत्तर:
खेल योजना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं –

1. उद्देश्य और लक्ष्य (Objectives & Goals)
2. प्रतिभागियों की संख्या (Number of Participants)
3. आयु और लिंग (Age & Gender)
4. उपलब्ध समय (Available Time)
5. स्थान और सुविधाएँ (Grounds & Facilities)
6. उपकरण और सामग्री (Equipment & Materials)
7. वित्तीय संसाधन (Financial Resources)
8. मौसम और ऋतु (Season & Climate)
9. प्रशासनिक नीतियाँ और नियम (Rules & Policies)
10. प्रशिक्षक एवं कर्मचारी (Coaches & Staff)

प्रश्न 3: उद्देश्य और लक्ष्य खेल योजना को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर:

- यदि उद्देश्य केवल **स्वास्थ्य सुधार** है तो सामान्य व्यायाम और खेल पर्याप्त होंगे।
- यदि उद्देश्य **प्रतियोगिता में सफलता** है तो उच्चस्तरीय प्रशिक्षण और चयन प्रक्रिया जरूरी होगी।
- यदि लक्ष्य **मनोरंजन** है तो सरल और रोचक खेलों की योजना बनाई जाएगी।

प्रश्न 4: प्रतिभागियों की संख्या खेल योजना पर क्या प्रभाव डालती है?

उत्तर:

- अधिक प्रतिभागी = बड़े स्तर का आयोजन (जैसे टूर्नामेंट)।
- कम प्रतिभागी = छोटे खेल या प्रतियोगिताएँ।
- प्रतिभागियों की संख्या के अनुसार मैदान, उपकरण और समय का निर्धारण करना पड़ता है।

प्रश्न 5: आयु और लिंग खेल योजना को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर:

- बच्चों के लिए हल्के और मनोरंजक खेल।
- युवाओं के लिए प्रतिस्पर्धात्मक खेल।
- महिला और पुरुष खिलाड़ियों के लिए अलग-अलग आयोजन और नियम।

प्रश्न 6: उपलब्ध समय खेल योजना को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर:

- यदि समय सीमित है तो कम समय वाले खेल (जैसे – बैडमिंटन, वॉलीबॉल)।
- अधिक समय होने पर लंबे टूर्नामेंट (जैसे – क्रिकेट, एथलेटिक्स मीट)।

प्रश्न 7: स्थान और सुविधाओं की उपलब्धता का खेल योजना पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर:

- खेल मैदान, जिम, ट्रैक, कोर्ट आदि की उपलब्धता सीधे तौर पर योजना को प्रभावित करती है।
- यदि स्थान छोटा है तो केवल छोटे खेल कराए जा सकते हैं।
- उचित स्थान और सुविधाएँ बड़े स्तर की प्रतियोगिता के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न 8: उपकरण और सामग्री खेल योजना को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर:

- उपकरणों की गुणवत्ता और संख्या योजना की सफलता तय करती है।
- पर्याप्त उपकरण न होने पर कुछ खेल आयोजित नहीं हो सकते।
- जैसे – फुटबॉल के लिए बॉल और गोल पोस्ट आवश्यक हैं।

प्रश्न 9: वित्तीय संसाधनों का खेल योजना पर क्या प्रभाव है?

उत्तर:

- पर्याप्त बजट होने पर आधुनिक उपकरण, अच्छे मैदान और प्रशिक्षक उपलब्ध कराए जा सकते हैं।
- सीमित धनराशि होने पर छोटे पैमाने पर आयोजन करना पड़ता है।
- स्पॉन्सरशिप और सरकारी सहयोग योजना को सफल बनाते हैं।

प्रश्न 10: मौसम और ऋतु खेल योजना को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर:

- गर्मियों में स्विमिंग, सर्दियों में हॉकी और फुटबॉल उपयुक्त हैं।
- बरसात के मौसम में इंडोर गेम्स (टेबल टेनिस, बैडमिंटन)।
- यदि मौसम प्रतिकूल है तो प्रतियोगिता स्थगित करनी पड़ सकती है।

प्रश्न 11: प्रशासनिक नीतियाँ और नियम योजना को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर:

- शिक्षा बोर्ड, खेल महासंघ और संस्थान की नीतियाँ आयोजन को प्रभावित करती हैं।
- जैसे – CBSE स्कूलों में वार्षिक खेल दिवस अनिवार्य होता है।
- खेल महासंघ द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना आवश्यक है।

प्रश्न 12: प्रशिक्षक एवं कर्मचारियों की भूमिका खेल योजना में क्या है?

उत्तर:

- प्रशिक्षक खिलाड़ियों को सही प्रशिक्षण देते हैं।
- रेफरी और आयोजन समिति खेलों का निष्पक्ष संचालन सुनिश्चित करते हैं।
- कर्मचारियों के बिना खेल आयोजन सफल नहीं हो सकता।

निष्कर्ष (Conclusion):

खेल योजना की सफलता इन सभी कारकों – **उद्देश्य, प्रतिभागियों की संख्या, समय, स्थान, उपकरण, धन, मौसम और प्रशासनिक नीतियों** पर निर्भर करती है। यदि इन कारकों का संतुलित ध्यान रखा जाए तो खेल गतिविधियाँ अधिक प्रभावी और सफल हो सकती हैं।

प्रभावी खेल प्रबंधन के लिए आवश्यक कौशल (Skills Required for Effective Sports Management in Hindi)

1. नेतृत्व कौशल (Leadership Skills)

- एक सफल खेल प्रबंधक को नेतृत्व क्षमता होनी चाहिए।
- वह टीम को सही दिशा दिखा सके और खिलाड़ियों को प्रेरित कर सके।
- निर्णय लेने और जिम्मेदारी उठाने की क्षमता आवश्यक है।

2. संवाद कौशल (Communication Skills)

- खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, अधिकारियों और मीडिया से स्पष्ट संवाद करने की क्षमता।
- अच्छे बोलने और सुनने की आदत से विवाद कम होते हैं।
- टीम के मनोबल को बढ़ाने के लिए प्रेरणादायी संवाद आवश्यक है।

3. संगठनात्मक कौशल (Organizational Skills)

- खेल आयोजन, प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना और प्रबंधन।
- संसाधनों (मैदान, उपकरण, समय और कर्मचारी) का सही उपयोग।
- काम को व्यवस्थित और समय पर पूरा करने की क्षमता।

4. निर्णय लेने की क्षमता (Decision-Making Skills)

- आपातकालीन और कठिन परिस्थितियों में त्वरित व उचित निर्णय लेना।
- खिलाड़ी चयन, रणनीति, वित्त और नियमों से जुड़े निर्णय लेना।

5. समस्या समाधान कौशल (Problem-Solving Skills)

- किसी भी विवाद, चोट, तकनीकी समस्या या प्रशासनिक बाधा का समाधान निकालना।
- टीम और संगठन को संकट से निकालने की क्षमता।

6. वित्तीय प्रबंधन कौशल (Financial Management Skills)

- खेल बजट तैयार करना और खर्च का संतुलन रखना।
- स्पॉन्सरशिप, ग्रांट और सरकारी सहयोग प्राप्त करने की कला।

- संसाधनों का उपयोग अधिकतम लाभ के लिए करना।

7. समय प्रबंधन कौशल (Time Management Skills)

- खेल प्रशिक्षण, प्रतियोगिता और शैक्षणिक कार्यक्रमों के बीच संतुलन बनाना।
- सभी कार्यों को निर्धारित समय पर पूरा करना।

8. तकनीकी और डिजिटल कौशल (Technical & Digital Skills)

- आधुनिक खेल तकनीक, डेटा एनालिसिस और स्पोर्ट्स सॉफ्टवेयर का ज्ञान।
- मीडिया, सोशल मीडिया और प्रचार-प्रसार के लिए तकनीकी उपयोग।

9. पारस्परिक कौशल (Interpersonal Skills)

- खिलाड़ियों, कोच, अधिकारियों, मीडिया और दर्शकों से अच्छे संबंध बनाना।
- टीमवर्क और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना।

10. खेल ज्ञान (Sports Knowledge)

- विभिन्न खेलों के नियम, तकनीक और रणनीतियों की जानकारी।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल संगठनों की नीतियों का ज्ञान।

11. अनुशासन और नैतिकता (Discipline & Ethics)

- खेल प्रबंधन में निष्पक्षता और न्यायप्रियता।
- खेल भावना और नियमों का पालन।
- भ्रष्टाचार, पक्षपात और अनुचित साधनों से दूरी।

12. संकट प्रबंधन कौशल (Crisis Management Skills)

- चोट, मौसम, तकनीकी खराबी या प्रशासनिक समस्या आने पर तुरंत समाधान।
- खेल आयोजन को बिना बाधा के पूरा कराना।

निष्कर्ष (Conclusion):

प्रभावी खेल प्रबंधन के लिए केवल खेलों का ज्ञान ही नहीं बल्कि **नेतृत्व, संवाद, संगठन, वित्तीय प्रबंधन, तकनीक, अनुशासन और समस्या समाधान कौशल** आवश्यक हैं। एक कुशल खेल प्रबंधक इन सभी कौशलों का संतुलित उपयोग करके खिलाड़ियों और खेल संस्थान दोनों को सफलता दिला सकता है।

UNIT-4 (CHAPTER-1)

:: खेलों में वित्तीय प्रबंधन (Basics of Financial Management in Sports) :-

1. वित्तीय प्रबंधन का अर्थ :-

खेलों में वित्तीय प्रबंधन का मतलब है –

खेल संगठनों, क्लबों, टीमों या किसी भी खेल आयोजन के लिए धन (Money/Funds) की योजना बनाना, उसका संग्रह करना, सही तरीके से उपयोग करना और नियंत्रित करना।

यह सुनिश्चित करता है कि उपलब्ध संसाधनों का सही और पारदर्शी तरीके से उपयोग हो और खेल गतिविधियाँ सफलतापूर्वक चलें।

2. खेलों में वित्तीय प्रबंधन की आवश्यकता :-

:: खेल उपकरण और इंफ्रास्ट्रक्चर (स्टेडियम, मैदान, जिम आदि) पर खर्च।

:: खिलाड़ियों की ट्रेनिंग, कोचिंग और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ।

:: टूर्नामेंट/इवेंट आयोजन की लागत (स्टाफ, यात्रा, आवास, सुरक्षा)।

:: खेल मार्केटिंग और प्रमोशन (स्पॉन्सरशिप, मीडिया कवरेज)।

:: खिलाड़ियों और स्टाफ का वेतन एवं पुरस्कार राशि।

:: पारदर्शिता बनाए रखने और धोखाधड़ी से बचने के लिए।

3. खेलों में वित्तीय प्रबंधन के प्रमुख स्रोत (Sources of Finance in Sports) :-

1. सरकारी सहायता :– खेल मंत्रालय, राज्य सरकार, राष्ट्रीय खेल संघ।

2. स्पॉन्सरशिप :– कंपनियाँ खेल आयोजनों या टीमों को फंड देती हैं।

3. टिकट बिक्री :– मैच/टूर्नामेंट के टिकट से आय।

4. प्रसारण अधिकार (Broadcasting Rights) : – टीवी/ऑनलाइन मीडिया से।

5. विज्ञापन (Advertisement) : – स्टेडियम और जर्सी पर एड।

6. दान एवं योगदान :– खेल प्रेमियों या NGOs से।

7. मर्चेंडाइजिंग (Merchandising) :– टीम जर्सी, कैप, स्पोर्ट्स गियर की बिक्री।

4. खेलों में वित्तीय प्रबंधन के प्रमुख कार्य :-

1. बजट बनाना (Budgeting) :-

हर गतिविधि के लिए धन का अनुमान लगाना और आवंटन करना।

2. फंड का संग्रह (Fund Raising) :-

* धन के स्रोत ढूँढना (स्पॉन्सर, टिकट, दान)।

3. धन का उपयोग (Utilization) :-

उपलब्ध फंड को ज़रूरत के अनुसार सही जगह खर्च करना।

4. निगरानी और नियंत्रण (Monitoring & Control) :-

* खर्च का लेखा-जोखा रखना और अनावश्यक खर्च रोकना।

5. निवेश निर्णय (Investment Decisions) :-

* अतिरिक्त धन को सुरक्षित रूप से निवेश करना।

6. पारदर्शिता (Transparency) :-

* अकाउंटिंग और ऑडिटिंग से सही रिकॉर्ड बनाए रखना।

5. खेल संगठनों में बजट के प्रकार :-

:: ऑपरेटिंग बजट :- दिन-प्रतिदिन के खर्चों के लिए।

:: कैपिटल बजट :- लंबे समय की परियोजनाओं के लिए (जैसे स्टेडियम निर्माण)।

:: इवेंट बजट :- किसी विशेष टूर्नामेंट या प्रतियोगिता के लिए।

6. खेल वित्तीय प्रबंधन की चुनौतियाँ :-

* धन की कमी या असमान वितरण।

* पारदर्शिता की कमी और भ्रष्टाचार।

* प्रायोजकों पर अत्यधिक निर्भरता।

* बड़े खेल आयोजनों (जैसे ओलंपिक, वर्ल्ड कप) में अत्यधिक खर्च।

* खिलाड़ियों की सुरक्षा और बीमा व्यवस्था

7. खेलों में वित्तीय प्रबंधन के लाभ :-

* संसाधनों का सही और योजनाबद्ध उपयोग।

* खिलाड़ियों और टीमों को बेहतर सुविधाएँ।

* खेल आयोजनों की सफलता और आकर्षण।

* स्पॉन्सर और निवेशकों का विश्वास बढ़ता है।

* खेल क्षेत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही।

8. उदाहरण (Example) :-

मान लीजिए एक राज्य स्तरीय क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन हो रहा है:

* कुल बजट: 50 लाख

* स्रोत: सरकारी अनुदान (20 लाख), स्पॉन्सर (15 लाख), टिकट बिक्री (10 लाख), मर्चेंडाइजिंग (5 लाख)।

* खर्च: मैदान किराया (5 लाख), उपकरण (8 लाख), खिलाड़ियों का रहना-खाना (10 लाख), मार्केटिंग (7 लाख), पुरस्कार राशि (10 लाख), स्टाफ व अन्य (10 लाख)।

:: इस प्रकार वित्तीय प्रबंधन से आय और व्यय का संतुलन बनाए रखा जाता है।

:: निष्कर्ष :-

खेलों में वित्तीय प्रबंधन केवल धन इकट्ठा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य **खेल गतिविधियों को सफल, पारदर्शी और दीर्घकालिक बनाना है। यह खिलाड़ियों, टीमों और खेल संगठनों के लिए एक मजबूत आधार तैयार करता है

UNIT-4 (CHAPTER-2)

□ खरीद (Purchase) प्रक्रिया

किसी भी संगठन/संस्था में वस्तुओं, सेवाओं या सामग्री की खरीद एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। इसे सुव्यवस्थित और पारदर्शी तरीके से करना आवश्यक है।

खरीद प्रक्रिया के मुख्य चरण:

1. **आवश्यकता की पहचान (Identification of Need):**
   - सबसे पहले विभाग अपनी ज़रूरत की वस्तु/सेवा की मांग प्रस्तुत करता है।
   - Requisition Form भरकर स्टोर या Purchase विभाग को भेजा जाता है।
2. **क्रय अनुमोदन (Purchase Approval):**
   - Purchase विभाग प्रबंधन से खरीद की अनुमति लेता है।
   - बजट और नीतियों के आधार पर अनुमोदन दिया जाता है।
3. **आपूर्तिकर्ता का चयन (Selection of Supplier):**
   - विभिन्न विक्रेताओं/आपूर्तिकर्ताओं से कोटेशन (Quotation) मंगाए जाते हैं।
   - उनकी कीमत, गुणवत्ता और समय पर आपूर्ति करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
4. **खरीद आदेश जारी करना (Purchase Order – P.O.):**
   - चुने हुए सप्लायर को औपचारिक **Purchase Order** भेजा जाता है।
   - इसमें मात्रा, दर, शर्तें और डिलीवरी की तारीख दी जाती है।
5. **सामान की प्राप्ति (Receipt of Goods):**
   - सामान मिलने पर **Goods Receipt Note (GRN)** बनाया जाता है।
   - सामग्री की जाँच (Quality & Quantity Inspection) की जाती है।
6. **भुगतान प्रक्रिया (Payment Procedure):**
   - विक्रेता द्वारा Invoice भेजा जाता है।
   - Invoice का मिलान **P.O., GRN और Invoice** से किया जाता है (Three-Way Matching)।
   - भुगतान समय पर नियमों के अनुसार किया जाता है।

□ ऑडिट प्रक्रिया (Audit Procedure)

ऑडिट का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि खरीद प्रक्रिया नियमों, नीतियों और वित्तीय मानकों के अनुसार हुई है या नहीं।

ऑडिट प्रक्रिया के मुख्य चरण:

1. **योजना बनाना (Planning):**
   - ऑडिटर सबसे पहले संगठन की खरीद नीति, बजट और नियमों को समझता है।
   - Risk Areas और High-Value Purchases पर ध्यान दिया जाता है।
2. **आंतरिक नियंत्रण की जाँच (Checking Internal Controls):**
   - Requisition, Approval, Supplier Selection, Payment Process आदि के नियंत्रणों की समीक्षा।
   - Segregation of Duties (काम का बंटवारा) चेक किया जाता है।
3. **दस्तावेज़ सत्यापन (Verification of Documents):**
   - Purchase Requisition, Quotations, Purchase Order, GRN, Invoice, Payment Vouchers आदि की जांच।
   - यह देखा जाता है कि कोई Forgery या Misuse तो नहीं हुआ।
4. **भौतिक सत्यापन (Physical Verification):**
   - खरीदी गई सामग्री वास्तव में स्टोर/कंपनी में है या नहीं।
   - Quality और Quantity की जाँच।
5. **मिलान (Reconciliation):**
   - P.O., GRN और Invoice का मिलान किया जाता है।
   - भुगतान समय और शर्तों के अनुसार हुआ या नहीं, इसकी जाँच।
6. **अनुपालन की जाँच (Compliance Check):**
   - क्या खरीद सरकारी नियमों, GST/Tax कानून और कंपनी नीतियों के अनुसार हुई?
7. **रिपोर्ट तैयार करना (Reporting):**
   - ऑडिटर अपनी Findings, Observations और Suggestions लिखकर **Audit Report** तैयार करता है।
   - इसमें Fraud, Irregularities या Improvements की सिफारिश होती है।

□ मुख्य बिंदु (Key Points):

- खरीद और ऑडिट दोनों प्रक्रियाएँ पारदर्शिता (Transparency), उत्तरदायित्व (Accountability) और विश्वसनीयता (Reliability) सुनिश्चित करती हैं।
- सही सप्लायर का चयन और दस्तावेजों का रख-रखाव बहुत आवश्यक है।

□ वित्तीय स्रोत (Funding Sources)

किसी भी संगठन, संस्था, परियोजना या खेल गतिविधि को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। यह धन अलग-अलग स्रोतों से प्राप्त किया जाता है।

मुख्य वित्तीय स्रोत:

1. **सरकारी स्रोत (Government Sources):**
   - **केंद्र सरकार व राज्य सरकार** विभिन्न योजनाओं और नीतियों के तहत फंड देती है।
   - उदाहरण: खेल मंत्रालय (Ministry of Youth Affairs and Sports), शिक्षा मंत्रालय, SAI (Sports Authority of India) आदि।
   - सरकारी अनुदान (Grants), सब्सिडी और Scholarship मिलते हैं।
2. **स्वायत्त संस्थाएँ (Autonomous Bodies):**
   - जैसे – **UGC, AIU, IOA** और विभिन्न स्पोर्ट्स फेडरेशन।
   - ये संस्थाएँ प्रशिक्षण, प्रतियोगिताएँ और रिसर्च प्रोजेक्ट्स के लिए धन उपलब्ध कराती हैं।
3. **स्थानीय निकाय (Local Bodies):**
   - नगर निगम, पंचायत, जिला परिषद खेल मैदानों और स्थानीय खेलों के लिए फंड प्रदान करते हैं।
4. **गैर-सरकारी संगठन (NGOs):**
   - सामाजिक संस्थाएँ और ट्रस्ट शिक्षा और खेलों को आर्थिक मदद देते हैं।
5. **कॉर्पोरेट सेक्टर (Corporate Sector):**
   - कंपनियाँ **CSR (Corporate Social Responsibility)** के अंतर्गत खेलों, शिक्षा और स्वास्थ्य पर धन खर्च करती हैं।
   - Sponsorship, Endorsement और Tournament Funding देती हैं।
6. **अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ (International Agencies):**
   - UNESCO, WHO, IOC, Asian Games Council जैसी संस्थाएँ खेलों और शारीरिक शिक्षा के लिए अनुदान देती हैं।
7. **व्यक्तिगत योगदान (Private Contributions):**
   - दानदाता, Alumni (पूर्व विद्यार्थी), समाजसेवी और परोपकारी लोग वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
8. **स्वयं अर्जित आय (Self-Generated Income):**

- संस्था अपनी आय खुद भी उत्पन्न कर सकती है, जैसे:
  - सदस्यता शुल्क (Membership Fee)
  - प्रतियोगिता टिकट
  - विज्ञापन (Advertisement)
  - Merchandise बिक्री (Sports Kit, Jersey आदि)

□ बजट आवंटन (Budget Allocation)

बजट आवंटन का अर्थ है प्राप्त धनराशि को विभिन्न गतिविधियों, विभागों और परियोजनाओं में सही और संतुलित तरीके से बाँटना।

बजट आवंटन के मुख्य पहलू:

1. **आवश्यकताओं का आकलन (Assessment of Needs):**
   - सबसे पहले यह देखा जाता है कि संस्था/विभाग को किन गतिविधियों और परियोजनाओं के लिए धन चाहिए।
2. **प्राथमिकता निर्धारण (Setting Priorities):**
   - शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रतियोगिता, बुनियादी ढाँचा, उपकरण आदि में से किस क्षेत्र को ज्यादा महत्व देना है, यह तय किया जाता है।
3. **संसाधनों का विभाजन (Division of Resources):**
   - फंड को अलग-अलग मदों में विभाजित किया जाता है, जैसे:
     - खेल उपकरण
     - मैदान/स्टेडियम का रख-रखाव
     - कोच और स्टाफ का वेतन
     - खिलाड़ियों की छात्रवृत्ति/भत्ता
     - प्रतियोगिताएँ व टूर्नामेंट
     - रिसर्च व ट्रेनिंग प्रोग्राम
4. **लागत नियंत्रण (Cost Control):**
   - यह सुनिश्चित करना कि फंड का दुरुपयोग न हो और हर पैसा सही जगह खर्च हो।
5. **निगरानी और मूल्यांकन (Monitoring & Evaluation):**
   - बजट खर्च की नियमित समीक्षा की जाती है।
   - Financial Reports और Audit के माध्यम से पारदर्शिता रखी जाती है।

□ महत्व (Importance of Funding & Budget Allocation):

- गतिविधियों का व्यवस्थित संचालन।
- संसाधनों का संतुलित उपयोग।
- खिलाड़ियों और छात्रों को प्रोत्साहन।
- बुनियादी ढांचे का विकास।
- पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करना।